



## International Journal of Home Science

ISSN: 2395-7476  
IJHS 2020; 6(3): 402-404  
© 2020 IJHS  
www.homesciencejournal.com  
Received: 26-06-2020  
Accepted: 22-07-2020

### डॉ. कुमारी रेखा

सहायक प्राध्यापक, गृहविज्ञान  
विभाग, विश्वेश्वर दयाल महिला  
कॉलेज, छपरा, बिहार, भारत

## कामकाजी महिलाओं की सामाजिक व आर्थिक स्थिति एक अध्ययन

### डॉ. कुमारी रेखा

#### सारांश

कामकाजी महिलाओं की सामाजिक व आर्थिक स्थिति का विश्लेषण किया गया है। वर्तमान महिला घरेलू छवि को तोड़कर कामकाजी महिला के रूप में पुरुषों के समकक्ष प्रतिस्थापित हो रही है। विभिन्न योजनाओं के तहत किये गये सरकारी प्रयासों ने उसकी सशक्तता में सहायता दी है। प्रस्तुत शोधकार्य का उद्देश्य विभिन्न पंचवर्षीय योजनाओं के तहत किये गये सरकारी प्रावधानों का अध्ययन करना तथा कामकाजी महिलाओं की सामाजिक व आर्थिक स्थिति का विश्लेषण करना है। इसके लिए विभिन्न द्वितीयक स्रोतों द्वारा सामग्री का संकलन कर उनका विश्लेषण किया गया है। अध्ययन में पाया गया कि स्वतंत्रता के पश्चात् किये गये विविध सरकारी प्रयासों के फलस्वरूप महिलाओं की स्थिति में सुधार हुआ है। परिवार की सामाजिक व आर्थिक सशक्तता का माध्यम बनकर वे स्वयं भी व्यक्तिगत रूप से सशक्त हुई हैं। परम्परा से आधुनिकता की ओर संक्रमण के इस दौर में आपसी तालमेल के कुछ मानक पुरुष व महिला को मिलकर निर्धारित करने होंगे, तभी महिलाओं की आर्थिक व सामाजिक सशक्तता सार्थक होगी।

#### प्रस्तावना

विकास की प्रक्रिया में निःसंदेह महिलाओं के योगदान को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता। विश्व में आज बढ़ते विकास की प्रक्रिया को सतत् विकास के नाम से जाना जाता है। भारत में महिलाओं की स्थिति से संबंधी समिति का मानना है कि समाज के विकास में महिलाओं की भागीदारी तय करते समय व्यक्तिगत स्वतंत्रता, समानता, परिवार में स्थिति, सामुदायिक भागीदारी और वैश्विक समाज में महिला और पुरुष दोनों को समान रूप से देखे जाने की आवश्यकता है। वर्ष 1975 को अन्तर्राष्ट्रीय महिला वर्ष के रूप में घोषित किया गया जिसका उद्देश्य विकास में महिला विकास को बढ़ावा देना और महिलाओं को अपने अधिकार के प्रति जागरूक करना था।

भूमिका को महत्वपूर्ण मानने वाले विद्वानों का विचार है कि एक व्यक्ति समाज में जो भूमिका निभाता है उससे उसका दृष्टिकोण प्रभावित होता है। मध्यम वर्ग की स्त्रियाँ आज जो शिक्षित और नौकरी करने वाली स्त्रियों की भूमिका निभा रही हैं उससे उन्हें एक नया सामाजिक तथा आर्थिक दर्जा प्राप्त हुआ है तथा जीवन के विभिन्न पहलुओं के प्रति उनका दृष्टिकोण भी प्रभावित हुआ है। विभिन्न सामाजिक-आर्थिक तथा राजनीतिक कानूनी अधिकारों के मिलने से-भले ही सैद्धान्तिक रूप में ही सही-शहर की शिक्षित स्त्रियों का स्त्री तथा पत्नी के रूप में अपनी भूमिका तथा स्थान एवं पुरुष तथा पति के रूप में पति के उत्तरदायित्व एवं स्थान की ओर दृष्टिकोण बदलता जा रहा है।

दूसरे समाजशास्त्रियों के अध्ययनों से भी पता चलता है कि नौकरी करने वाली शिक्षित स्त्रियों का दृष्टिकोण, विशेषकर विवाह और परिवार के भीतर तथा बाहर के अपने अधिकारों और विशेषाधिकारों की ओर बहुत कुछ बदल चुका है। लेकिन क्या स्त्री के उत्तरदायित्व और दर्जे की ओर पुरुष वर्ग और समाज का भी दृष्टिकोण बदला है? क्या इस देश के संविधान और विभिन्न कानूनी और राजनैतिक अधिकारों ने सिद्धान्त रूप में स्त्रियों को जो सामाजिक दर्जा दिया है वह स्त्रियों को प्राप्त हो सका है? स्त्री के दृष्टिकोण में जो परिवर्तन आये हैं क्या उसकी वजह से पुरुषों के साथ के उसके अन्तर्व्यक्तिक सम्बन्धों में कटुता आई है? यदि ऐसा है तो परिवार के भीतर या बाहर उठने वाले संघर्षों एवं तनाव के क्या कारण हैं?

किसी भी समाज की तस्वीर बदलने में महिलाओं का योगदान महत्वपूर्ण होता है। नेपोलियन बोनापार्ट ने कहा था कि मुझे योग्य माता दे दो मैं तुमको योग्य राष्ट्र दूँगा। आज हर क्षेत्र में महिलाएँ पुरुषों के कंधे से कंधा मिलाकर कार्य कर रही हैं। महिला सशक्तीकरण के दौर में महिलाओं ने घर की देहड़ी से बाहर कदम बढ़कर स्वयं कामकाजी महिला होने का गौरव हासिल किया है तथा स्वयं की व समाज की स्थिति को परिवर्तित करने का बीड़ा उठाया है।

#### Corresponding Author:

### डॉ. कुमारी रेखा

सहायक प्राध्यापक, गृहविज्ञान  
विभाग, विश्वेश्वर दयाल महिला  
कॉलेज, छपरा, बिहार, भारत

पुरातन समाज में किसी की माँ अथवा बहू या पत्नी के रूप में पहचानी जाने वाली महिला ने अपनी परम्परागत छवि को तोड़ा है। आज उसकी स्वयं की अपनी पहचान है। उसने पुरुषों के समकक्ष स्तर, अवसर तथा सामाजिक, आर्थिक व कानूनी अधिकार प्राप्त कर लिए हैं। एक कामकाजी महिला की स्थिति का आँकलन करना एक कठिन कार्य है। यूँ तो प्रत्येक महिला कामकाजी होती है। परन्तु घरेलू महिला के कामकाज का आर्थिक मूल्य न होने के कारण उसे कामकाजी की श्रेणी में नहीं रखा जाता। पर्वतीय क्षेत्रों के संदर्भ में यदि देखा जाय तो यहाँ महिला ही घरेलू जीवन की धुरी होती है और कामकाज के बोझ के तले दबी रहती है, परन्तु उसके कार्य का आर्थिक रूप से कोई मूल्यांकन न होने के कारण उसे कोई महत्त्व नहीं दिया जाता। यूँ तो सामान्य रूप से एक महिला का जीवन सदैव ही परिवार को समर्पित रहा है, परन्तु आज महिला परिवार से इतर स्वयं के लिए भी सोचने लगी है, परन्तु क्या उसकी इस स्थिति को समाज ने स्वीकृत किया है? इस शोध पत्र के माध्यम से यही जानने का प्रयास किया गया है।

शोध का उद्देश्य—प्रस्तुत शोध के निम्नलिखित उद्देश्य निर्धारित किये गये हैं—

1. महिलाओं को सामाजिक, आर्थिक रूप से सशक्त बनाने के संदर्भ में किये गये सरकारी प्रयासों (विशेष रूप से विभिन्न पंचवर्षीय योजनाओं के माध्यम से किये गये प्रयास) का अध्ययन करना।
2. कामकाजी महिलाओं की सामाजिक स्थिति का विश्लेषण करना।
3. कामकाजी महिलाओं की आर्थिक स्थिति का विश्लेषण करना।

कामकाजी महिला का तात्पर्य ऐसी महिला से है जिसे किसी भी प्रकार के शारीरिक अथवा मानसिक कार्य के बदले आर्थिक मूल्य प्राप्त होता है। सामाजिक स्थिति का तात्पर्य महिला को उसके कार्यों के आधार पर समाज में प्राप्त प्रतिष्ठा से है। इसी प्रकार एक आर्थिक ईकाई के रूप में महिला के कार्यों का आँकलन तथा स्वयं व परिवार के विकास में उसकी भूमिका को आर्थिक स्थिति के रूप में लिया गया है।

### कामकाजी महिलाओं की सामाजिक स्थिति

पंडित जवाहर लाल नेहरू ने कहा था कि महिलाओं की स्थिति देखकर ही किसी राष्ट्र की उन्नति का पता लगाया जा सकता है। भारतीय संदर्भ में आज महिलाएँ संक्रमण के दौर से गुजर रही हैं। वे घरेलू से कामकाजी स्तर की ओर कदम बढ़ा रही हैं। एक तरफ वे अपने परिवार की आर्थिक आवश्यकताओं को पूरा करने में सक्षम हुई हैं, वहीं दूसरी ओर कार्यस्थल पर भी अपनी प्रतिष्ठा को स्थापित कर रही हैं कामकाजी महिलाओं का शिक्षा स्तर अच्छा होने के कारण उनके पास जानकारियाँ अधिक होती हैं तथा उनका मानसिक स्तर सशक्त होता है। कार्यक्षेत्र में नित्य नये अनुभव, नयी समस्याएँ उसके मानसिक स्तर को विकसित करते हैं, जिससे उसके आत्मविश्वास में वृद्धि होती है। अपने कार्यक्षेत्र से प्राप्त अनुभव के आधार पर वे प्राप्त ज्ञान का उपयोग अन्य क्षेत्रों में करने में सक्षम होती हैं। गोला (2016) के अनुसार, “पिछले पाँच दशकों में महानगरीय क्षेत्र में रहने वाली महिलाओं की जिम्मेदारियों में 35 प्रतिशत से अधिक की वृद्धि हुई है। महिला सशक्तीकरण के इस युग में कामकाजी महिला को सामाजिक रूप से अधिक सम्मान प्राप्त होता है। सामाजिक उत्सवों में उसे अन्य महिलाओं से उच्चतर आँका जाता है। समाज को कुछ देने का सुअवसर तथा स्वयं अपनी सुदृढ़ पहचान बनाने का सुअवसर उसे प्राप्त होता है। आत्मविश्वास और आत्मसम्मान सिखाया नहीं जा सकता। परिस्थितियों के अनुरूप ये प्रवृत्तियाँ स्वयं विकसित होती हैं” (स्ट्रोमक्विस्ट, 2005)। सशक्तीकरण का तात्पर्य महिला को इतना कुशल बनाना होता है कि वह अपने आस-पास सामाजिक, आर्थिक वातावरण का लाभ उठा सके व अपनी भावनाओं व इच्छाओं को दृढ़ता के साथ अभिव्यक्त कर सके। इस दृष्टिकोण से एक

कामकाजी महिला एक सशक्त महिला की श्रेणी में आती है। महानगरीय संस्कृति में परिवार में सांस्कृतिक मूल्यों के सृजन के संदर्भ में उसकी भूमिका और भी अधिक महत्त्वपूर्ण है, क्योंकि वहाँ पारिवारिक वातावरण के रूप में संयुक्त परिवार के अन्य सदस्य या आस-पड़ोस का योगदान नगण्य होता है। विपरीत इसके पढ़ी-लिखी होने के बावजूद भी महिलाएँ घरेलू वातावरण में अन्ध विश्वास व दकियानूसी विचारधाराओं का शिकार हो जाती हैं, क्योंकि वातावरण एक सशक्त कारक के रूप में अपनी भूमिका का निर्वाह करता है। घरेलू महिलाएँ आमतौर पर जीवन के महत्त्वपूर्ण क्षेत्रों में निर्णय लेने के संदर्भ में पुरुषों पर ही आश्रित रहती हैं, जबकि पेज (1990) के अनुसार, “अपने जीवन को स्वयं निर्देशित व नियंत्रित करने की क्षमता ही सशक्तीकरण कहलाती है। घर से बाहर स्वयं निर्णय लेने के कारण कामकाजी महिलाएँ सशक्तता के इस स्तर को प्राप्त कर लेती हैं।”

### कामकाजी महिलाओं की आर्थिक स्थिति

आर्थिक रूप से भी कामकाजी महिलाएँ सशक्त होती हैं, इसी कारण अपनी आवश्यकताओं को महत्त्व दे पाती हैं तथा परिवार को भौतिक सुख-सुविधाएँ प्रदान करते हुए सामाजिक व आर्थिक स्तर को बढ़ाने में सहायक होती हैं। गोला (2016) के अनुसार, “महिलाएँ विशेषकर महानगरों में अपने घर परिवार की आर्थिक जिम्मेदारी उठाती हैं तथा सशक्तीकरण की पहचान के रूप में विद्यमान महिलाएँ अपने घरेलू कामकाज हेतु किसी एक व्यक्ति को रोजगार भी दे पाती हैं।” स्ट्रोमक्विस्ट (2005) के अनुसार, “आर्थिक सशक्तीकरण का तात्पर्य है कि स्त्री किसी उत्पादन कार्य द्वारा स्वायत्तता प्राप्त कर पाये। वर्तमान समाज में पहचान स्थापित करने हेतु आज ‘फेमिली स्टेट्स’ ही सबसे महत्त्वपूर्ण बन गया है।” अतः इस स्टेट्स की प्राप्ति हेतु महिलाएँ सामाजिक व आर्थिक सशक्तता के हर पैमाने पर स्वयं को मजबूती से खड़ा रखना चाहती हैं। इस तरह वे व्यक्तिगत सशक्तता की ओर कदम बढ़ा रही हैं। आर्थिक स्थिति के आँकलन हेतु उनकी व्यक्तिगत स्थिति के संदर्भ में यदि देखा जाय तो वह आर्थिक रूप से सशक्त होती हैं। इस सशक्तता के बल पर वे स्वयं के तथा अपने बच्चों के हित के संदर्भ में निर्णय लेने लगी हैं।

आर्थिक अशक्तता के कारण प्राचीन समय में सदैव पुरुष (मशः पिता, पति, पुत्र) के अधीन रहने वाली महिला कामकाजी होने के कारण स्वनिर्देशित होने की स्थिति को प्राप्त कर चुकी है। आर्थिक सशक्तता के बल पर वह घरेलू समस्याओं के समाधान का हर सम्भव प्रयास करती है, तथापि पैसा हर समस्या का समाधान तुरन्त नहीं करता। यदि घरेलू नौकर काम छोड़कर चला जाय तो उसका प्रतिस्थानी तुरन्त मिलना बड़ा कठिन है। महानगरीय क्षेत्रों में जहाँ महिलाएँ निजी क्षेत्रों में कार्यरत हैं। घर से कार्यस्थल तक पहुंचने में लगने वाला समय तथा कार्य समय को देखा जाय, तो महिला 12 घंटे घर से बाहर बिताती है। केवल चार घंटे का समय ही उसके पास पारिवारिक संबंधों के निर्वहन के लिए बचता है, परन्तु परिवार, समाज व कार्य स्थल के उत्तरदायित्वों के बीच समायोजन की कोशिश में ये सदैव लगी रहती हैं। समायोजन की इस प्रक्रिया में यद्यपि तनावग्रस्तता की स्थितियाँ भी आती हैं, परन्तु इनकी सशक्तता इन परिस्थितियों से उबरने में सहायक होती है, परन्तु ग्रामीण क्षेत्रों में 90 प्रतिशत महिलाएँ आज भी अकुशल श्रमिक हैं, जिस कारण उन्हें उनके श्रम का उचित मूल्य नहीं प्राप्त हो पाता है। अकुशल होने के कारण उत्पादित माल पर भी उनका कोई नियंत्रण नहीं रह पाता है

### निष्कर्ष

महिला व पुरुष दोनों ही पारिवारिक उत्तरदायित्वों के लिये सम्यक रूप से जिम्मेदार हैं। तथापि परम्परागत परिवेश में पले-बढ़े होने के कारण पारिवारिक उत्तरदायित्व महिलाएँ स्वयंमेव अपने ऊपर ले लेती हैं। परिवार की धुरी मुख्यतः महिला को इसलिए सम्भवतः माना जाता है। सामाजिक स्थिति के संदर्भ में भी यद्यपि महिला की

समाज में एक पहचान होती है। घरेलू महिला की तुलना में समाज में उसका उच्चतर स्थान होता है, परन्तु इस पहचान के एवज में वह भागम-भाग में उलझ कर रह गयी है। जिन परिवारों में बड़े बुजुर्गों के रूप में दादा-दादी अथवा नाना-नानी का संरक्षण बच्चों को नहीं मिल पाता वहाँ बच्चों के लिए उसकी चिन्ता उसके कामकाज को प्रभावित करती है। कार्यक्षेत्र में अतिरिक्त समय की माँग उसके लिए तनाववर्धक हो जाती है। अतः अपने कार्यक्षेत्र के दायित्वों की सहज सम्पन्नता में इनका योगदान पुरुषों के समकक्ष नहीं हो पाता। भारतीय संस्कृति के संदर्भ में यह स्थिति वर्तमान परिप्रेक्ष्य में सत्य है। संक्रमण के इस दौर के गुजरने के बाद भावी पीढ़ी की महिलाएँ सम्भवतः सशक्तता के अधिक उच्च प्रतिमानों को स्थापित कर सकेंगी और पुरुषों के समकक्ष स्वयं को स्थापित कर सकेंगी।

यद्यपि महिला चाहे घरेलू हो या कामकाजी उसकी भूमिका महत्त्वपूर्ण है, परन्तु घरेलू महिला के कार्य को कोई मूल्य निर्धारित न होने के कारण कामकाजी महिला को अधिक महत्त्व दिया जाता है, परन्तु वर्तमान कामकाजी महिलाओं में सशक्तता के साथ पनप रही 'लिव इन रिलेशनशिप' की प्रवृत्ति, अधिक उम्र में विवाह तथा विवाह के पश्चात् बच्चों की जिम्मेदारी से भय जैसे प्रश्न परिवार नामक संस्था के अस्तित्व पर प्रश्न चिह्न लगाने वाले हैं। अतः कामकाजी महिलाओं को विकास के पथ पर अग्रसर रहते हुए उपरोक्त प्रश्नों पर अवश्य विचार करना होगा तथा पुरुषों को भी घरेलू उत्तरदायित्वों के निर्वहन में अवश्य सहभागिता निभानी होगी। तभी महिला सशक्तता को सार्थक बन सकेंगी।

#### संदर्भ सूची

1. Bhadury, Ankita and Asim Kumar Mukarjee: The status of Indian working women in present Era, International journal of Science, technology and Management 2015;04.
2. Gola Maya. Bhartiya pariwaro me Kamkaji mahila, Uttara 2016.
3. Page Ruth. Paths of Empowerment: Ten years of early childhood work in Israel. The Hague: Bernardvan Leer Foundation 1990.
4. Paycheck. In-4 key social forces to improve the status of working women in India, retrived from net on 27 March 2018.
5. Planningcommission.nic.in-XII five year plan, Report of the Working Group on Women's Agency and Empowerment, Accessed on 28 March 2018.
6. Rao Behara Srinivas. Women Empowerment and Planning Process, retrived from counterwriter.in on 28 March 2018.
7. Sodhganga.inflibnetac.in: The Status of Women in Indian Society, retrived from counterwriter.in on 27 March 2018.
8. Stromquist Nelly P. The Theoretical and Practical bases for Empowerment, in Women, Education and Empowerment, Discovery Publishing House, New Delhi, 2005.